विचार बिन्दु

जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु। –ह्यूगो

एक कबीर और चाहिए

हाल ही में जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित वृत्त चित्र कबीर पथ देखने का अवसर मिला। इस वृत्त चित्र में कबीर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया। साथ ही उनके द्वारा रचित समाज के पाखंड का पर्दाफाश करने वाले बहुत सारे दोहे भी सम्मिलित थे। फिल्म को देखते समय एक विचार मन में आया कि जितनी प्रासंगिकता कबीर की आज से 600 वर्ष पूर्व थी उससे कहीं अधिक आज है। कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ था।

वे वैरागी साधु थे। उनका विवाह लोई से हुआ। उनकी दो संतान थी, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। उनका पालन पोषण नीमा और नीरू ने किया जो जाति से जुलाहे (बुनकर) थे।

वे औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं थे, किंतु उन्हें मानव स्वभाव, मनुष्य के ईश्वर के साथ संबंध और समाज के विभिन्न विषयों की गहन जानकारी थी। उनके द्वारा कहा गया एक-एक शब्द विचारोत्तेजक होता था। उन्होंने कई ऐसी बातें कहीं जिनकी कल्पना भी आज के समय में करना लगभग असंभव है। उस समय न तो लोकतंत्र था न ही संविधान, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता हो। इसके बावजूद न केवल कबीर जैसा व्यक्ति हुआ, अपितु 119 वर्ष तक जीवित रहकर अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को सुधारने और उसे दिशा दिखाने का कार्य करता रह सका। उनके दोहे बड़े सारगर्भित थे और बहुत कम शब्दों में अत्यंत गहरी बात कह देते थे। कबीर सांप्रदायिक सद्भाव उत्पन्न करने का कार्य करते रहे। आज की स्थितियों को देखते हुए अविश्वसनीय लगता है और कभी-कभी तो लगता है कि यदि कबीर वर्तमान समय में हुए होते तो अब तक न जाने उनके विरुद्ध कितनी एफ आई आर, भावनाएं आहत करने के नाम पर दर्ज हो चुकी होतीं। शायद वे 'मॉब लिंचिंग' के शिकार हो गए होते।

कहा तो यह भी जाता है कि जब कबीर बीमार हुए तो उन्होंने स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिया। बाहर हिंदू और मुसलमान आपस में इस बात पर लड़ रहे थे कि उनका अंतिम संस्कार किस विधि से किया जाय? हिंदुओं का कहना था कि वे हिंदू थे इसलिए उनके शरीर का दाह संस्कार किया जाय जबकि मुस्लिम चाहते थे कि कबीर को दफनाया जाए क्योंकि वे मुस्लिम थे। दोनों पक्ष इस बारे में झगड़ा कर ही रहे थे, तभी किसी ने कहा कि दरवाजा खोलकर उन्हें देख तो लो कि उनकी क्या स्थिति है? जब लोग दरवाजा खोल कर कमरे में गए तो उन्होंने देखा कि वहां पर कबीर का शरीर नहीं बल्कि एक चादर थी जिस पर बहुत सारे फूल रखे हुए थे। इनमें से चादर तो मुसलमान अपने साथ ले गए और उन्होंने उसे उनकी मजार बनाकर चढ़ाया। फूलों को हिंदुओं और मुसलमानों ने आधा-आधा बांट लिया। मुसलमान के द्वारा फूल उनकी मजार पर चढ़ा दिए गए और हिंदुओं द्वारा उनके समाधि स्थल पर चढ़ाए गए।

वे सामाजिक कुरीतियों और धर्म के नाम पर चलने वाले पाखंड के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से दोनों धर्मों के पाखंडपूर्ण व्यवहार पर करारी और तीखी चोट की। उदाहरण के लिए, उन्होंने हिंदुओं द्वारा मूर्ति पूजा को निशाना बनाते हुए कहा :–

''पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़,
तातें या चक्की भली, पीस खाए संसार।''

इसी प्रकार उन्होंने मस्जिदों से दी जाने वाली अज़ान के बारे में यह लिखा :–

''कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता ऊपर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।''

क्या आज किसी कवि में यह साहस हो सकता है ? कोई साहस कर भी ले, तो क्या उसके विरुद्ध कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होगी? अधिक संभावना तो यही है कि ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध फतवा जारी कर दिया जाएगा। इसे समाज सुधार बताने के बजाय धर्म पर हमला घोषित कर दिया जाएगा।

कबीर का मानना था कि हर इंसान में ईश्वर का निवास होता है। उसे मंदिर-मस्जिद में ढूंढना सही नहीं है।

उन्होंने यह भी कहा कि भगवान ना तो काबा में मिलेगा ना काशी में बल्कि वह तो हर इंसान में मिलेगा।

उनकी ये पंक्तियां देखिए:–

'मोको कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में
न मंदिर में न मस्जिद में, न काबा न कैलाश में।''

उनका मानना था कि ईश्वर को किसी धर्मस्थान में ढूंढना व्यर्थ है, वह तो हर मनुष्य में है। यदि मनुष्य का मन शुद्ध और निर्मल है तो वह ईश्वर के ही समान है। उन्होंने हर इंसान में ईश्वर के स्वरूप को देखा और उसी की सेवा करने पर बल दिया।

किसी भी नदी या कुंड में स्नान करके पाप धोने की परंपरा पर भी उन्होंने कटाक्ष किया। उस जमाने में उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी व्यक्ति के पाप, किसी पानी से धोने से नहीं समाप्त हो सकते। इसके लिए मनुष्य को कुछ अच्छा कर्म करना होता है और उनकी दृष्टि में अच्छे कर्म से ही पाप धुल सकते हैं न कि किसी जगह जाकर नहाने या डुबकी लगाने से। आजकल जबकि महाकुंभ हर मीडिया चैनल पर छाया हुआ है, उस समय यदि इस प्रकार की बात कोई लिख या कह देता तो उसे शायद जीवित नहीं छोड़ा जाता।

कबीर ने यह बात कही कि इंसान किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, सबके खून का रंग लाल ही होता है तो फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे से छुआछूत कैसे कर सकता है और कैसे दूसरे से घृणा कर सकता है? ऐसा करते समय क्या वह दूसरे में ईश्वर के दर्शन नहीं करता?

उनका कहा यह दोहा देखिए:–

''काहे को कीजे पांडे छूत विचार
छूत ही ते उपजा सब संसार
हमरे कैसे लोहू तुमरे कैसे दूध
तुम कैसे बामन पांडे हम कैसे सूद (शूद्र)।''

कबीर ने यह बात कही कि इंसान किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, सबके खून का रंग लाल ही होता है तो फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे से छुआछूत कैसे कर सकता है और कैसे दूसरे से घृणा कर सकता है? ऐसा करते समय क्या वह दूसरे में ईश्वर के दर्शन नहीं करता?

कबीर का मानना था कि केवल किताब में पढ़ने से कोई पंडित नहीं हो जाता और बड़ी बड़ी पोथियां पढ़ने वाले भी मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। केवल प्रेम शब्द को अपने जीवन में अपना लेने पर व्यक्ति वास्तविक ज्ञानवान हो जाता है। उनकी पंक्तियां इस प्रकार हैं :–

''पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ ,पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े, सो पंडित होय।''

वर्तमान समय में भी हम देखें तो पाएंगे कि अधिकांश भ्रष्टाचार और घोटाले अधिक पढ़े-लिखे व्यक्तियों द्वारा ही किए जा रहे हैं। कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति तो छल-कपट जानता ही नहीं है। ये पंक्तियां उस व्यक्ति के द्वारा लिखी गई थीं, जो नितांत निरक्षर अवश्य था किंतु जो मन की गहराइयों में डुबकियां लगाता था। यह इस बात की ओर भी संकेत करती हैं कि हमें अपनी शिक्षा पद्धति में ऐसा परिवर्तन करना चाहिए जो प्रेम के मानवीय गुण को विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही प्रतिष्ठापित करे।

आज यदि इन पंक्तियों के मर्म को समझ कर व्यक्ति व्यवहार करना प्रारंभ कर दे तो सारे समाज में वातावरण प्रेम मय हो जाए और पढ़ने के बाद भी जो लोग एक-दूसरे के जान के दुश्मन हो रहे हैं ऐसी प्रवृत्ति अपने-आप समाप्त हो जाए।

जो लोग सदैव दूसरों में बुराई ढूंढते रहते हैं उनको संबोधित करते हुए कबीर ने कहा:–

''बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न मिलया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।''

इसी प्रकार जो व्यक्ति दिन भर माला फेरते रहते हैं किंतु उल्टे-सीधे काम करने से नहीं हिचकते, उनके बारे में यह कहा:–

''माला फेरत जग मुआ, मिटा न मन का फेर
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।''

कबीर दास जी का कहना था कि हाथ की माला को छोड़कर अगर मन की माला को फेरें तो मन कहीं अधिक शुद्ध हो सकता है। मन की शुद्धता को बनाए रखने पर जोर देते हुए ही कबीर ने यह लिखा था। आज जब सार्वजनिक जीवन में अधिकांश लोगों की कथनी और इन करनी में बहुत अन्तर है, उन्हें कबीर की इस वाणी पर गंभीरता से विचार कर अपने आचरण को परिवर्तित करना चाहिए। इससे सार्वजनिक जीवन में शुचिता बढ़ेगी।

सबके प्रति आदर भावना रखने की बात उन्होंने कितने सरल शब्दों में कह दी :–

''तिनका कबहुं न निंदिये, जो पांव न तर होय
कबहुं उड़े आँखिन पड़े पीर घनेरी होय।''

किसी छोटे से छोटे व्यक्ति की भी निंदा कभी मत कीजिए। पता नहीं कब वह आपके लिए अत्यंत पीड़ा का कारण बन जाए? यह उपदेश व्यक्तियों को किसी की भी निंदा करने से बचाने का काम करता है। यह आजकल बहुत आवश्यक है जब प्रतिदिन हम लोगों को गरिमा विहीन तरीके से एक दूसरे की निंदा करते हुए देखते हैं।

कबीर ने यह भी कहा था:–

''धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।''

यह उक्ति आज के समय न केवल प्रासंगिक है अपितु आवश्यक भी, क्योंकि कई युवा कम से कम समय में अमीर बनने के चक्कर में अपराध की दुनिया में कदम बढ़ा रहे हैं।

आज से 600 साल पहले धर्मांधता होते हुए भी कबीर जैसा सरल, निरक्षर व्यक्ति निर्भीकता से अपनी बात कह पाया, यह तत्कालीन शासकों की विभिन्न मतों के प्रति उदारता को ही दर्शाता है। भले ही कई लोग उस समय के शासकों को लगातार कोसते हों, वे आज के तथाकथित शासकों से तो इस मामले में बेहतर ही थे।

वे धार्मिक प्रतीकों के विरुद्ध थे और खुल पर अपनी बात कहते थे। आज, जब धर्मांधता चरम पर है, दोनों ही धर्मों के कट्टर लोग धर्म, जाती, भाषा, लिंग के नाम पर लोगों को विभाजित करके उन्हें लड़ाने के काम में लगे हैं, देश को एक बार फिर कबीर की आवश्यकता है जो सबको खरी-खरी बात कहने का साहस जुटा पाए। सरकार और समाज को ऐसे व्यक्ति के प्रति सहिष्णुता दर्शानी होगी। जब सभी धर्मों और जातियों के लोग कबीर की बात के मर्म को समझेंगे, तब ही इंसानियत का बोलबाला होगा। लोगों को यह भी समझ में आएगा कि केवल आडंबर और पाखंड से न देश का भला होने वाला है न स्वयं उनका।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कुंभ मेला : हिंदू धर्म के मतों, संप्रदायों व समुदाय का समागम

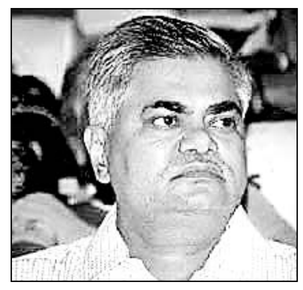

राजेश्वर सिंह

हिंदू धर्म के नाम से जिस आस्था को हम जानते हैं, उसके क्रमिक विकास का परिचय हमें वैदिक वांग्मय, उपनिषद, पुराण, स्मृति, षटदर्शन, रामायण, महाभारत व श्रीमद्भागवत आदि से प्राप्त होता है। यद्यपि हिंदू धर्म में एक सर्वोच्च धर्म ग्रंथ, एक सर्वोच्च धर्म स्थल, व एक सर्वोच्च धर्माधिकारी की व्यवस्था नहीं है, किंतु चूंकि वेद का सार उपनिषद् में व उपनिषद् का सार श्रीमद्भगवद्गीता में समाहित है अत: श्रीमद्भगवद्गीता को हिंदू धर्म का आधारभूत ग्रंथ माना जा सकता है।

हिंदू धर्म में जिन तीन ग्रन्थों, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता व ब्रह्म सूत्र को प्रस्थानत्रयी माना जाता है, उन पर सर्वप्रथम शंकराचार्य ने भाष्य लिखा व अद्वैत मत का प्रवर्तन किया। इसके उपरांत यह परंपरा प्रारंभ हुई कि आचार्य की उपाधि उसी को दी जाएगी जो प्रस्थानत्रयी पर भाषण लिखेगा। केवल आचार्य को ही उक्त भाष्य के आधार पर मत प्रवर्तन व मठ स्थापना का अधिकार था।

शंकराचार्य के उपरांत रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत, मध्वाचार्य ने द्वैतवाद, निंबार्काचार्य ने द्वैताद्वैतवाद, वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवाद इत्यादि मतो का प्रवर्तन किया व मठ स्थापित किए। शंकराचार्य ने पंचदेवोपासना का भी प्रचलन किया, जिसके आधार पर शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य व गणेश की पूजा प्रारंभ हुई। वस्तुत: ये पंचदेव पंच महाभूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिव आकाश तत्व, विष्णु जल तत्व, शक्ति अग्नि तत्व, सूर्य वायु तत्व व गणेश पृथ्वी तत्व के प्रतीक हैं।

पंचदेव उपासना के अतिरिक्त शंकराचार्य ने दशनाम संन्यास परंपरा का भी प्रचलन किया जिसमें गिरि, पर्वत, सागर उपाधि धारी संन्यासी ज्योतिर्मठ से, पुरी, भारती, सरस्वती उपाधिकारी श्रृंगेरी मठ से, तीर्थ, वन और अरण्य उपाधिकारी गोवर्धन मठ से तथा तीर्थ और आश्रम उपाधिधारी द्वारका मठ से संबंधित हैं। कालांतर में यह दशनाम संन्यासी 13 अखाडों में संगठित हुए जिनमें आव्हान, अटल, महानिर्वाणी, आनंद, जूना व अग्नि अखाड़े शैवमत के, दिगंबर, निर्मोही व निर्वाणी अखाड़े वैष्णव मत के, बड़ा पंचायती व नया पंचायती अखाड़े उदासीन मत के तथा निर्मल अखाड़ा सिक्ख मत का है। इसके अलावा 1954 में अखाड़ा परिषद भी अस्तित्व में आई जिसकी व्यवस्थाओं को सभी अखाड़े मान्यता देते हैं। अखाड़ों में आचार्य महा मंडलेश्वर, महा मंडलेश्वर, श्रीमहंत तथा अन्य पदाधिकारी होते हैं जिनका विधिवत रूप से लोकतांत्रिक पद्धति से चुनाव होता है। हिंदू धर्म का प्रत्येक मंदिर संस्थागत या वैचारिक रूप से किसी न किसी मत, मठ संप्रदाय अथवा अखाड़े से जुड़ा हुआ है, जो हिंदू धर्म की आंतरिक सुव्यवस्था व सुदृढ़ सांगठनिक संरचना का परिचायक है। इस प्रकार हिंदू धर्म विभिन्न मतों एवं संप्रदायों का समुच्चय या समूह है।

हिंदू धर्म, धर्म को जिस तरह से परिभाषित करता है, वह इसे मानव धर्म का स्वरूप प्रदान करता है। धर्म को विभिन्न स्मृतियों व ग्रन्थों में जिस तरह से परिभाषित किया गया है, उसमें संयम, नैतिकता, सत्याचरण, पवित्रता, सत्कर्म, करुणा, दया, प्रेम, परोपकार, दान, अक्रोध, धैर्य, क्षमा, विद्यार्जन इत्यादि सम्मिलित हैं।

धर्माचरण से मनुष्य स्व, पर और परम के एकत्व का अनुभव करता है, स्व को सर्व में और सर्व को स्व में देखने में समर्थ हो जाता है तथा शांति व सुख को प्राप्त करता है जो भौतिक, तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से भी मानवीय अस्तित्व का चरम उद्देश्य व परम आवश्यकता है। इस प्रकार धर्म मनुष्य के लौकिक व पारलौकिक कर्तव्यों का मूलभूत व मार्गदर्शक सिद्धांत है। हिंदू धर्म के विभिन्न मतों व संप्रदायों में धर्म के इस मूलभूत तत्व को इष्ट देवता, मंदिर, धर्म ग्रंथ व पूजा पद्धति इत्यादि का आस्थामूलक बाह्य स्वरूप प्रदान किया गया है, जिसका उद्देश्य यह है कि सामान्य जन भी धर्म के गूढ व गहन सिद्धांतों को सरलता व सहजतापूर्वक समझ कर धर्माचरण में प्रवृत्त हो सके तथा शांति व सुख को प्राप्त कर सके।

समय के साथ अन्य धर्मों की तरह हिंदू धर्म में भी ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास, जातिवाद व अस्पृश्यता आदि कुरीतियां आई, जिन्हें बुद्ध, महावीर, भक्ति आंदोलन के संतों, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी इत्यादि महापुरुषों ने चुनौती दी, जिनके प्रति आमतौर पर हिंदू समाज सहिष्णु रहा व समय-समय पर आत्मालोचन, आत्म सुधार व आत्म परिष्कार में प्रवृत्त भी हुआ। हिंदू धर्म व हिंदू समाज की मूल चेतना व मुख्य धारा आदिकाल से आज तक प्रकृति प्रेमी, मानवतावादी, समतामूलक, उदार, सहिष्णु व सर्व समावेशी रही है तथा जीव में शिव को देखने में विश्वास करती है।

ज्योतिष के अनुसार नवग्रहों में सूर्य आत्म तत्व का, चंद्रमा मन का व बृहस्पति ज्ञान का कारक ग्रह है। इन तीन ग्रहों की विशिष्ट ब्रह्मांडीय स्थितियों में भारत में चार स्थान, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जयिनी व नासिक पर कुंभ का आयोजन होता है। कुंभ मेला पंचमहाभूतों, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश व वायु से प्रत्यक्ष संपर्क में रहकर आत्मा, मन व ज्ञान के निखार व परिष्कार का पावन अवसर प्रत्येक आस्थावान हिंदू को प्रदान करता है ताकि वह एकाग्र व सुसंगठित मन, वचन व कर्म से अपने लौकिक कर्तव्यों का निर्वहन करे तथा मानव जीवन के परम लक्ष्य, जन्म-मरण के चक्र से विमुक्ति की दिशा में अग्रसर हो।

इस प्रकार कुंभ मेला हिंदू धर्म के विविध मतों, संप्रदायों तथा विराट हिंदू समाज का विशाल समागम है, जो व्यापक जन समुदाय को मानव जीवन के मूल उद्देश्य को समझकर उसके अनुकूल जीवन पद्धति विकसित व व्यवस्थित करने का बोध प्रदान करता है। इस अवसर पर वीतरागी संतों तथा विद्वान महापुरुषों द्वारा प्रतिदिन जो तत्व चर्चा की जाती है तथा लोक मंगल के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है, उसका समुचित प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए तथा मुख्य फोकस इसी पर होना चाहिए, ताकि कुंभ मेला आयोजन का मुख्य लक्ष्य गौण ना हो जाए और यह विराट धार्मिक सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन अपने मूलभूत उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध हो सके।

–राजेश्वर सिंह,
आईएएस (सेवानिवृत्त)।

जलदाय विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीण पेयजल की समस्या से परेशान

खेतड़ी में पेयजल पाइप लाइन से पांच दिन से व्यर्थ बह रहा है पानी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी क्षेत्र में पानी की बड़ी समस्या है, वहीं दूसरी ओर जलदाय विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के चलते पांच दिन से पाइप लाइन लीकेज होने के कारण पानी व्यर्थ बह रहा है। पाइप लाइन में पानी व्यर्थ बहने से आमजन को पेयजल की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार मुख्य बस स्टैंड स्थित दरवाजे के पास करीब पांच दिन से परियोजना की पाइप लाइन में लिकेज होने से पानी व्यर्थ बह रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि मुख्य सड़क से कस्बे में पानी की पाइप लाइन जा रही है, उससे कस्बे के वार्डों में पानी की सप्लाई होती है, लेकिन पिछले करीब पांच दिन से पाइप लाइन लीकेज होने के कारण लाखों लीटर पानी व्यर्थ बह गया। समस्या को लेकर विभागीय अधिकारियों को अवगत भी करवाया गया, लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं किया। ग्रामीणों ने बताया कि पाइप लाइन से पानी लीकेज होने के कारण कई वार्डों में पानी की सप्लाई पूरी तरह से नहीं हो पा रही है और न ही पानी का प्रेशर आ रहा है। उन्होंने बताया कि कस्बे में भी पानी की किल्लत मची हुई है, लेकिन पाइप लाइन का रखरखाव करने वाली कंपनी लापरवाह बनी हुई है, जिससे ग्रामीणों को पानी के लिए परेशान होना पड़ रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि चार दिन से भी पानी की सप्लाई नहीं होती। पानी की लाइन को ठीक करवाने के लिए कई बार शिकायत भी कर चुके हैं, लेकिन फिर भी कंपनी लापरवाह बनी हुई है। पाइप लाइन में पानी का लीकेज सड़क किनारे होने से आने जाने वालों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। पानी सप्लाई शुरू होने पर

■ कस्बे में पानी की किल्लत, पाइप लाइन का रखरखाव करने वाली कंपनी लापरवाह बनी

ऊपर तक पानी का फव्वारा निकलता है, जिससे ऊपर से गुजर रही 11 केवी बिजली लाइन से बड़ा हादसा होने का अंदेशा बना हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि जल्द ही पाइप लाइन को दुरूस्त नहीं किया तो ग्रामीणों की ओर से विभाग कार्यालय के सामने विरोध-प्रदर्शन किया जाएगा।

इस संबंध में अधिशासी अभियंता सुनील कुमार ने बताया कि लाइन में लीकेज होने पर सप्लाई बंद करवा दी गई है, टीम को मौके पर भेजकर जल्द ठीक करवाया जाएगा।

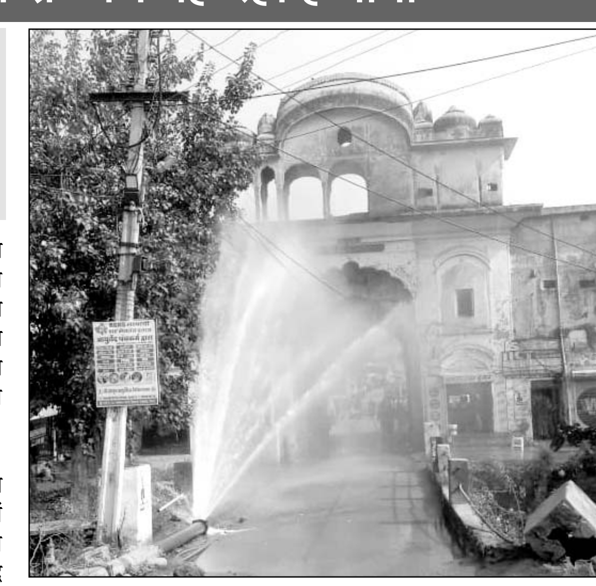

पानी सप्लाई शुरू होने पर ऊपर तक पानी का फव्वारा निकलता है।

संस्थापन अधिकारी के 351और प्रशासनिक के 799 कर्मचारियों का प्रमोशन

शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारियों की पदोन्नति

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग ने प्रदेशभर में कार्यरत संस्थापन अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों के पदों पर पदोन्नति कर दी है। अब इनके पदस्थापन की तैयारी की जा रही है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय और प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय के अलावा प्रदेशभर के कार्यालयों में इनका पदस्थापन अगले कुछ दिनों में शुरू हो सकता है। पिछले दिनों कर्मचारियों ने आंदोलन करके पदोन्नति की मांग की थी।

निदेशालय से जारी आदेश में संस्थापन अधिकारी 351और प्रशासनिक अधिकारी 799 पदों पर नियमित पदोन्नति की गई है। अब वर्ष 2024-25 तक की पदोन्नति हो गई है। जयपुर में शिक्षा संकुल में शिक्षा सचिव कृष्ण कुणाल, निदेशक आशीष मोदी, संयुक्त शासन सचिव मनीष गोयल एवं संयुक्त शासन सचिव दिनेश शर्मा की कमेटी ने पदोन्नति प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया।

■ पिछले दिनों कर्मचारियों ने आंदोलन करके पदोन्नति की मांग की थी

शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष कमल नारायण आचार्य ने बताया कि 54 दिनों तक दिए धरने के परिणाम आ रहे हैं। शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारियों की विभागीय पदोन्नति प्राथमिकता है। आज संस्थापन अधिकारियों 351 और प्रशासनिक अधिकारियों की 799 पदों पर वर्ष 2024-25 की नियमित डीपीसी अब तक कि सबसे बड़ी डीपीसी हो गई है। संघ के संरक्षक मदन मोहन व्यास और राजेश व्यास ने इस निणर्य का स्वागत किया है। व्यास ने बताया कि पदोन्नति के लिए संघ ने 20 फीट लंबा ज्ञापन दिया था। 54 दिन धरना दिया गया था।

बालिका स्कूल मर्ज करने पर छात्राओं का प्रदर्शन

जोधपुर, (कासं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड दूसरा पुलिया को दूसरे स्कूल में मर्ज करने पर सोमवार को यहां अध्ययनरत छात्राओं ने विरोध जताया। छात्राओं ने स्कूल बंद कर प्रदर्शन किया और धरने पर बैठ गई। बाद में शिक्षा अधिकारी वहां पहुंचे और छात्राओं को इस संबंध में शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर व्यवस्थाओं को यथावत रखने का आग्रह करने का आश्वासन दिया। तब छात्राओं ने अपना धरना समाप्त किया।

जानकारी के अनुसा शिक्षा विभाग ने हाल ही में आदेश जारी कर जोधपुर की 30 से लेकर 45 साल पुरानी स्कूलों को बंद कर अन्य स्कूलों में मर्ज कर दिया है। इनमें 550 और 450 बच्चियों के नामांकन के अलावा ग्रामीण क्षेत्र की प्राइमरी व मीडिल स्कूलों को भी नियमों को ताक में रखकर बंद किया गया। कई बालिका स्कूलों को बालक स्कूलों में मर्ज किया गया है। इसको लेकर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया है। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड दूसरा पुलिया को भी राज्य सरकार द्वारा मर्ज करने का आदेश जारी हुआ है जिसको लेकर छात्राओं ने इसका विरोध किया और स्कूल के बाहर प्रदर्शन किया। मौके पर शिक्षा अधिकारी पहुंचे और छात्राओं को भरोसा दिलाया कि इस संबंध में शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर व्यवस्थाओं को यथावत रखने का आग्रह किया जाएगा।

राशिफल मंगलवार 21 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 11:37 तक, धृति योग रात्रि 3:49 तक, बव करण दिन 12:40 तक, चन्द्रमा दिन 10:03 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर योग और राजयोग सूर्योदय से दिन 12:40 तक है। आज कालाष्टमी है, आज राष्ट्रीय माघ मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:54 से 11:14 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 1:57 तक, शुभ 3:17 से 4:17 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:56

मेष

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृष

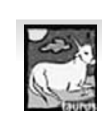

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

मिथुन

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

कर्क

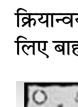

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि होगी।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक

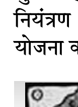

आर्थिक/वित्तिय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

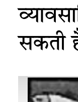

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।